राख की साख पर

हम बिछड़ते दिल बिछड़ते

उस राख की साख पर

जिंदगी में हर कोई चलता

उस राख की साख पर

दुनिया चॉद छू रही दिशा नई नई

मैं अब भी बैठा हूॅ

उस के दिल की साख पर

हंस रहा प्रतिबिंब मेरा

हंस रहा प्रतिबिंब उसका

इन न्यनों को सूखा देख

हंस रहा मैं भी अकेला

सूखे वृक्ष की डाल पर

जीवन यापन जीवन मरन

बहती इस गंगा का जीवन

बस सूखी राख पर

राख की उस साख पर

शोभित अग्रवाल